पास्टर संतोष जेम्स
www.gracetabernaclehyd.org

(तीतुस 2:1) - "पर तू ऐसी बातें कहा कर जो खरे उपदेश के योग्य हैं।"
(2 तीमुथियुस 4:3) - "क्योंकि ऐसा समय आएगा जब लोग खरा उपदेश ना सह सकेंगे....।"

विषय- धधकती भट्ठी में स्थिर खड़े रहना

(To stand in the fiery furnace)

प्रार्थना:

हे पिता, हम आपके पास वचन सुनने के लिए फिर से आते हैं। प्रभु, सुनने से ही विश्वास आता है। आपके वचन के द्वारा हमारे जीवन में ज्योति प्रज्वलित होती है। आपका वचन कहता है, "अगर हम उस ज्योति में रहते हैं तो हमारी संगति परमेश्वर और मनुष्य के साथ रहती है।" हमे और भी ज्योति चाहिए। हमारे कानो को छुइए ताकि हम सुन सकें, ताकि हमारे पास ज्ञानी के कान हों, ताकि आपके दूसरे आगमन से पहले जो भी इन अंतिम दिनों में घट रहा है, उसमे खड़े रहने की समझ हो सके। पिता, हमे सिखाइए, हम आपके चरणों में इंतज़ार कर रहे हैं। यीशु मसीह के मधुर नाम में हम प्रार्थना करते हैं। आमीन!

हम विश्वास के विषय में आज फिर से देखेंगे। एक ऐसा विश्वास है जो सत्य है। हम अपने जीवन में जिन परिस्थितयों से भी गुजरते हैं ऐसा विश्वास है जो अधिक समय तक जीवित रहता है। सभी लोगों को किसी न किसी चीज़ पर विश्वास होता है। जब परमेश्वर विश्वास के विषय में कहते हैं तो यह वो विश्वास है जिसके बारे में वचन बताती है कि यह जयवन्त दिलाता है और हमे जयवन्त होना आवश्यक है। जब हम अन्तिम दिनों के बारे में यीशु की शिक्षा को देखते हैं, जो हमे मत्ती 24, लूका 21 और मरकुस 13 में पाते हैं, इन तीनो अध्याय में आप थोड़ा-सा अन्तर मगर बहुत महत्वपूर्ण अन्तर पाएँगे।

मत्ती 24:13 [13] **परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।**
जबकि लूका कहता है कि
लूका 21:36 [36] **इसलिये जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आने वाली घटनाओं से बचने, और मनुष्य के पुत्र के साम्हने खड़े होने के योग्य बनो॥**

अगर आप इन पदों को देखें तो यह एक दूसरे के विपरीत हैं। एक कहता हैं, "तुम्हे अन्त तक धीरज धरना ही होगा और जो अन्त तक धीरज धरेगा उसी का उद्धार होगा।" दूसरा पद कहता है, "जागते और प्रार्थना करते रहो ताकि इन सभी घटनाओं से बचने और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य लोगों में से गिने जाओ।" ऊपर से देखें तो यह एक दूसरे के विपरीत में दिख सकता है परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। यह एक ही सिक्के के दो पहलू के समान है। परमेश्वर कहते हैं, "अगर तुम्हारा विश्वास सही है तो जो भी परिस्थितयों का तुम सामना करो, चाहे तो आप उसमे से सत्य होकर निकले या फिर वह (प्रभु) आपको उस में से बच निकलने के योग्य समझ सकते हैं परन्तु यह परमेश्वर के हाथों में हैं।" सच्चे विश्वास का उद्देश्य हमेशा परमेश्वर ही हैं और सिर्फ परमेश्वर ही हैं। पिछली बार हमने देखा और जाना कि परमेश्वर सक्षम हैं, वह इच्छुक हैं, वह भले हैं, वह विश्वासयोग्य हैं परन्तु प्रश्न यह है कि जब हम परमेश्वर को ऐसे अनुभव करते हैं तो क्या हम उस क्षण तक पहुँचते हैं जहाँ हम बिना किसी शर्त के उनका अनुसरण करे? क्या होगा अगर हम ऐसी परिस्थिति का सामना करे जहाँ हम जानते हैं कि परमेश्वर की इच्छा है परन्तु अभी वह आपको उस परिस्थिति से बाहर निकालने के लिए तैयार नहीं है? आप जानते हैं कि वह सक्षम हैं परन्तु वह कहते हैं, "मैं तुम्हे बाहर नहीं निकालूँगा।" आप जानते हैं कि वह भले हैं परन्तु वह कहते हैं, "मैं हस्तक्षेप नहीं करूँगा।" वह कहते हैं, "क्या तुम बिना शर्त के मेरा अनुसरण करोगे?" देखिए, जब हम जानते हैं कि परमेश्वर की यह इच्छा है तो परमेश्वर का अनुसरण करना बहुत आसान होता है। एक नवजात बच्चा जो हर चीज़ के लिए रोता है, वह हमेशा देखता है कि उसके माता-पिता तैयार है। जब बच्चा थोड़ा बड़ा हो जाता है, तो वह यह सोचता है कि मेरे पिता सक्षम है। आपकी ज़रूरते छोटी होती हैं, सो जो कुछ भी आप कहते हैं, आपके पिता आपके लिए करते हैं। हम जानते हैं कि परमेश्वर भला है, प्रश्न यह है, क्या हम उस क्षण तक पहुँचे हैं जहाँ हम कह सके, "प्रभु मैं जानता हूँ कि आप इच्छुक हैं, मैं जानता हूँ कि आप सक्षम हैं, मैं जानता हूँ आप भले हैं मगर मैं बिना किसी शर्त के आपके पीछे चलना चाहता हूँ।" क्या हम परमेश्वर के तरीकों को समझते हैं? यीशु के जीवन को देखें, जब यीशु की उम्र दो साल से थोड़ी कम थी, तो प्रभु अपने पुत्र को मिस्र ले गए और उसे हेरोदेस राजा से बचा लिया और उस जगह पर दो साल के नीचे अन्य बच्चों को मार डालने जाने दिया। क्या परमेश्वर इच्छुक हैं? क्या परमेश्वर सक्षम हैं? क्या परमेश्वर भले हैं? क्या हम इस बात को समझते हैं कि राजा हेरोदेस के

बजाय क्यों हज़ारों बच्चों को मरना पड़ा? क्या हम समझते हैं? यहाँ यूहन्ना बप्तिस्मा देनेवाला जो कि बहुत धर्मी व्यक्ति था और वो परमेश्वर के लिए जो सत्य है उसका प्रचार करता था, मगर उसका सिर कटवाकर थाल में लाया गया। हेरोदेस ज़िन्दा है और हेरोदियास भी ज़िन्दा है। क्या हम परमेश्वर को समझते हैं? क्या हम यह नहीं सोचते कि इससे अच्छा तो यह होता कि हेरोदेस मरता और यूहन्ना प्रचार करते रहता परन्तु परमेश्वर कहते हैं कि मेरे प्रभुत्व में यूहन्ना की मृत्यु होगी और हेरोदेस ज़िन्दा रहेगा। क्या हम समझते हैं? प्रेरितों के काम की पुस्तक में, याकूब को मार दिया जाता है, वो एक नौजवान था। कुछ दिनों बाद, पतरस को छोड़ दिया जाता है, ऐसा क्यों हुआ, परमेश्वर? आपने याकूब को मरने की और पतरस को आज़ाद होने की अनुमति क्यों दी? आपने याकूब को भी क्यों नहीं छुड़वाया? परमेश्वर कहते हैं, "यह मेरा प्रभुत्व है। मेरी गति तुम्हारी गति के समान नहीं है, मेरे विचार तुम्हारे विचारों के जैसे नहीं है। मैं इच्छुक हो सकता हूँ, मैं सक्षम हूँ, मैं भला हूँ, मैं विश्वासयोग्य हूँ, परन्तु क्या तुम बिना किसी शर्त के मेरा अनुसरण करोगे?" इस मुकाम तक परमेश्वर हरेक को लाने की कोशिश करते हैं। यह वास्तविक विश्वास है, यह सच्चा विश्वास है जो जयवन्त करेगा परन्तु परमेश्वर दबाव को आने की अनुमति देते हैं। परमेश्वर शैतान को हमारे जीवन में दबाव लाने की अनुमति देते हैं। **हमारे विश्वास को तोड़ने के लिए शैतान इसे इस्तेमाल करेगा, और परमेश्वर हमारे विश्वास को बढ़ाने के लिए इसी परिस्थिति को इस्तेमाल करेंगे।** यही तो यीशु कर रहे हैं। इसे समझिये। हर व्यक्ति कोई न कोई क्लेश या परीक्षा का सामना कर रहा है। अगर आप उतीर्ण नहीं हुए तो आप कतई अगले स्तर पर नहीं पहुँच पाएँगे। यही सच्चाई है, हमे उस स्तर तक जाना है जहाँ हम बाइबिल में उन मज़बूत लोगों के समान जयवन्त हों जहाँ हम परमेश्वर का अनुसरण बिना किसी शर्त के करें। सो हम पाएँगे कि चेले यीशु का अनुसरण कर रहे हैं और वे बहुत उत्साहित हैं। एक कोढ़ी चंगा होता है, उन्हें एहसास होता है कि परमेश्वर कितने इच्छुक हैं, कितने सक्षम है कि वे अशुद्ध व्यक्ति को छूने के लिए भी तैयार हैं। उन्होंने देखा कि परमेश्वर कितने सक्षम है कि उन्होंने सिर्फ एक शब्द कहा और कहीं दूर एक व्यक्ति चंगा हो गया। उन्होंने देखा कि परमेश्वर कितने भले हैं, जिसने चंगाई माँगी भी नहीं, उसे उन्होंने चंगा किया। जिस किसी को भी परमेश्वर के पास लाया गया, उसे चंगाई और छुटकारा मिला। कोई जन बहुत उत्साहित हो गया और उसने कहा, "प्रभु, जहाँ आप जाएँगे, मैं भी वहीं जाऊँगा।"

मत्ती 8:19 [19] और एक शास्त्री ने पास आकर उस से कहा, हे गुरू, जहां कहीं तू जाएगा, मैं तेरे पीछे पीछे हो लूंगा।

जिस तरीके से उसने कहा, यही समस्या है। उसने कहा, "प्रभु जहाँ कहीं आप जाएँगे, मैं आपके पीछे पीछे जाऊँगा।" क्या हम ऐसा कह सकते हैं? यीशु कहाँ जा रहे हैं? वह नगरों में और गाँवों में जा रहे हैं परन्तु आप जानते हैं कि वह वास्तव में क्रूस की ओर जा रहे हैं। जहाँ प्रभु जाते हैं क्या हम भी वहाँ जाएँगे? हर रोज़ यीशु खुद को मारते हैं और परमेश्वर के लिए जीते हैं और यीशु उस व्यक्ति से मूल रूप से पूछते हैं, "तुम्हारे विश्वास का उद्देश्य क्या है? क्या यह मेरे कारण है या फिर जो तुमने मुझे करते हुए देखा है उसके कारण विश्वास है? मैं जानता हूँ तुम बहुत उत्साहित हो क्योंकि तुमने यह सब होते हुए देखा मगर तुम कहते हो कि जहाँ मैं जाऊँगा तुम मेरे पीछे-पीछे आओगे।" वह कहते हैं, *"मैं तुम्हे बताना चाहता हूँ लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिए सिर धरने की भी जगह नहीं है। (मत्ती 8:20)"* क्या यह सच है? आप क्रूस की ओर देखेंगे तो आप पाएँगे कि यह सच ही है। वह कहते हैं, "क्या तुम मेरे पीछे-पीछे आओगे जहाँ भी मैं जाऊँगा?" क्या आपका और मेरा विश्वास बिना किसी शर्त के परमेश्वर के पीछे-पीछे चलने की कसौटी पर खड़े रह सकते हैं? क्योंकि हम में से कई लोग जब हम प्रभु के पास आते हैं और प्रभु में बढ़ रहे होते हैं तो हम याकूब के समान होते हैं जो परमेश्वर से सौदा करेगा, "प्रभु, अगर मैं अपनी परीक्षा में उतीर्ण हुआ तो मैं चर्च की हर सभा में पक्का आऊँगा। अगर मुझे नौकरी मिली, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आपको पहले महीने की तनख्वाह ज़रूर दूँगा।" यह याकूब है जिसने ऐसे ही परमेश्वर के साथ सौदा किया था, 'मेरी रक्षा करे, मैं लौट आऊं, तो दशमांश आपका है' (उत्प० 28:20-22)। आप परमेश्वर के साथ सौदा करते हैं और अनजाने में हम इस पर हँसते हैं यह समझे बिना कि परमेश्वर से सौदा करके हम क्या खो रहे हैं, परन्तु यीशु ने कभी अपने पिता (परमेश्वर) से सौदा नहीं किया और वह अपने चेलों को भी अपने साथ सौदा करने की अनुमति नहीं देंगे। सो 23 पद में वचन बताती है कि वह नाँव पर चढ़ा और उनके चेले उसके पीछे-पीछे आए। प्रभु ने कहा, ठीक है, "तुमने कहा तुम मेरा अनुसरण करोगे जहाँ भी मैं जाऊँगा और मैंने तुम्हे बताया है कि अगर तुम मेरे पीछे आओगे तो मेरी यह शर्ते हैं कि जहाँ भी मैं जाऊँगा वहाँ कोई गारन्टी नहीं है," और वह नाँव पर चढ़े और उसके संग चेले भी चढ़े और पद 24 कहता है,

मत्ती 8:24 [24] और देखो, झील में एक ऐसा बड़ा तूफान उठा कि नाव लहरों से ढंपने लगी; और वह सो रहा था।

क्या वह नाँव पर चढ़े? क्या वह उनकी अगुवाई कर रहे थे? वह कहते हैं, "जब मैं तुम्हारी अगुवाई करता हूँ तो यह सब होगा। मैं तुम्हारे जीवन में आई आँधी के मध्य में तुम्हारी अगुवाई कर सकता हूँ। और यही नहीं, मैं सो जाऊँगा ताकि मैं देख सकूँ कि

तुम्हारी क्या प्रतिक्रिया होगी या तुम कैसे बर्ताव करोगे। क्या तुम विश्वास की प्रतिक्रिया दोगे या डर की प्रतिक्रिया दोगे? अगर तुम ने ध्यानपूर्वक मेरी शिक्षा को पर्वत पर सुना होगा और मुझे करीब से अनुसरण करने पर तुम्हारी आँखें मुझ पर लगी होंगी और इसलिए तुम्हे कोई डर नहीं होगा।" परन्तु आप देखेंगे कि वे लोग डरे हुए थे।

मत्ती 8:25 [25] तब उन्होंने पास आकर उसे जगाया, और कहा, हे प्रभु, हमें बचा, हम नाश हुए जाते हैं।

इसलिए यीशु इस प्रश्न का उत्तर देते हैं। तुम मेरा अनुसरण क्यों करते हो? हम सभी मसीह के अनुयायी हैं। सिर्फ यीशु जानते हैं कि चेले कौन हैं। यहाँ उपस्थित सभी लोग मसीह के अनुयायी है। मसीह के अलावा कोई नहीं जानता कि कौन चेला है। सो यीशु अनुयायियों में से चेले कैसे बनाते हैं? आँधी आने की अनुमति देते हैं, लेकिन हम क्या करते हैं? शैतान हमारे डर को इस्तेमाल करता है। आप अगले पद को देखें कि यीशु क्या कहते हैं।

मत्ती 8:26 [26] उस ने उन से कहा; हे अल्पविश्वासियों, क्यों डरते हो?....

क्यों डरते हो? शैतान डर का इस्तेमाल करता है, डर के विभिन्न प्रकार होते हैं। शैतान खोने के डर को, धन-दौलत के खोने के डर को, इज्ज़त के खोने के डर, अपने जीवन को खोने के डर को इस्तेमाल करता है। एक धनी नौजवान को अपनी दौलत खोने का डर था। दाऊद ने झूठ क्यों बोला, एक व्यक्ति को धोखा और हत्या क्यों किया? क्योंकि उसे अपनी इज्ज़त के खोने का डर था। क्या आप जानते हैं लोग जब डरते हैं तो बहुत कुछ कर गुज़रते हैं? वे डरते हैं और शैतान उनके डर का उपयोग करता है और परमेश्वर उन परिस्थितियों का उपयोग करके दिखाना चाहते हैं कि हम क्यों उनके अनुयायी बनना चाहते हैं? आप क्यों यीशु के पीछे चलना चाहते हैं? मिस्र में अब्राहम क्यों गया? क्योंकि उसे अपने धन-दौलत के खोने का डर था। जब वह मिस्र में गया, उसने झूठ क्यों कहा? क्योंकि उसे अपने प्राण के खोने का डर था। उसकी अगुवाई कौन कर रहा था? उसके संग हमेशा कौन था? वहाँ परमेश्वर थे, परमेश्वर हम में से हर एक जन को दिखाना चाहते हैं, 'तुम मेरे पीछे-पीछे क्यों चलना चाहते हो? तुम किस तरह से मेरे पीछे-पीछे चलते हो? इस इक्कीसवीं सदी में जबकि मेरा आगमन इतना नज़दीक है, क्या तुम मेरे अनुयायी हो? या तुम चेले हो? क्या तुम अन्त तक धीरज धरोगे? या तुम इस योग्य बनोगे कि इन घटनाओं से बच सको? आज हम बाइबिल में एक घटना को देखेंगे जो इससे सम्बन्धित है कि कैसे परमेश्वर हमे आँधियों के द्वारा हमे अलग करेंगे। यह अंतिम दिनों की तरह ही है। अग्नि में दानिएल के तीन मित्रों के बारे में उल्लेख बाइबिल की सबसे प्रसिद्ध कहानियों में से एक है। अगर कोई दानिएल के तीनो मित्रों के नाम नहीं भी मालूम होंगे तौभी वे इस कहानी को जानते हैं। यह दानिएल के तीसरे अध्याय में वर्णन है। याद रखे, यह अंतिम दिनों की तरह ही वर्णन किया गया है। बेबीलोन में शायद लाखों-करोड़ों इब्रानी लोग हैं। इस संसार में करोड़ो-खरबों मसीही लोग हैं। एक राजा उदय हुआ है जिसका नाम नबुकदनेस्सर है। उसने एक मूर्ति तैयार की और कहा, "सभों को इस मूर्ति को दण्डवत करना होगा।" वचन बताती है, "अन्त के दिनों में एक राजा उठेगा और एक मूर्ति होगी। सभी को जबरन उसे आराधना करने के लिए कहा जाएगा।" वहाँ जो लाखों इब्रानी लोग हैं उनका बिल्कुल भी वर्णन नहीं है क्योंकि उन्होंने समझौता कर लिया और मूर्ति को पूजना शुरू कर दिया। चार इब्रानियों को हम नाम से जानते हैं, दानिएल और उसके तीन मित्र। दानिएल वहाँ उपस्थित नहीं है। तीसरे अध्याय में आपको दानिएल कहीं भी दिखाई नहीं देगा। दानिएल की परीक्षा अग्नि में नहीं हुई क्योंकि वह इस योग्य गिना गया कि इससे बच सके। इसलिए अगर कोई कष्ट या क्लेश से बच सकता है तो वो यीशु मसीह की दुल्हन है क्योंकि वह इस योग्य पाई गयी कि इन घटनाओं से बच जाए। अन्य तीन आग से नहीं बचे बल्कि आग में से निकल कर आ गए। परमेश्वर कह रहे हैं, "तुम देखो, इस तरह की घटनाएँ मौजूद है और मैं हमेशा लोगों को तैयार करने की कोशिश करता हूँ। इन में से दानिएल जैसा या उनके मित्रों जैसा बने, तीसरा न बने। तुम बच सकते हो या फिर इस में से होकर निकल सकते हो, मगर समझौता कभी न करो।" इससे पहले यह दानिएल का विश्वास था जिससे यह तीन मित्र अडिग खड़े रह सके। यीशु मसीह का विश्वास ही सर्वदा था जिसकी वजह से चेले बहुत मज़बूत खड़े रहने सके। अब दानिएल मौजूद नहीं है, क्या आप खुद से खड़े रहने पाएँगे? अब, यीशु सो रहे हैं, क्या आप आँधी को विश्वास से नियन्त्रित कर सकते हैं? यही परमेश्वर पूछ रहे है। कभी-कभी हमारे जीवन में परमेश्वर जानबूझकर सो जाते हैं हालांकि वह कभी न सोते हैं, न ऊँघते हैं। आप दानि० 3:1 और फिर 4-6 देखें,

दानिएल 3:1 [1] नबूकदनेस्सर राजा ने सोने की एक मूरत बनवाई, जिनकी ऊंचाई साठ हाथ, और चौड़ाई छ: हाथ की थी। और उसने उसको बाबुल के प्रान्त के दूरा नाम मैदान में खड़ा कराया।

दानिएल 3:4-6

[4] तब ढिंढोरिये ने ऊंचे शब्द से पुकार कर कहा, हे देश-देश और जाति-जाति के लोगों, और भिन्न भिन्न भाषा बोलने वालो, तुम को यह आज्ञा सुनाई जाती है कि, [5] जिस समय तुम नरसिंगे, बांसुली, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो, तुम

उसी समय गिर कर नबूकदनेस्सर राजा की खड़ी कराई हुए सोने की मूरत को दण्डवत करो। [6] और जो कोई गिरकर दण्डवत न करेगा वह उसी घड़ी धधकते हुए भट्ठे के बीच में डाल दिया जाएगा।

और अब हम इसके अनुरूप देखेंगे जो हमारे जीवन काल में होने वाला है।

प्रकाशितवाक्य 13:15,16,18

[15] और उसे उस पशु की मूरत में प्राण डालने का अधिकार दिया गया, कि पशु की मूरत बोलने लगे; और जितने लोग उस पशु की मूरत की पूजा न करें, उन्हें मरवा डाले। [16] और उस ने छोटे, बड़े, धनी, कंगाल, स्वतंत्र, दास सब के दाहिने हाथ या उन के माथे पर एक एक छाप करा दी। [18] ज्ञान इसी में है, जिसे बुद्धि हो, वह इस पशु का अंक जोड़ ले, क्योंकि मनुष्य का अंक है, और उसका अंक छः सौ छियासठ है॥

ठीक है, अगर आप दानिएल 3:1 को ध्यान से पढ़े तो इसमें साठ हाथ और छः हाथ का ज़िक्र है। सो अब आपके पास साठ का छः (number 6 of 60) है और यह छः भी है, ठीक है। अब हम पद 5 में आते हैं, इसमें देखिए कितने बाजे या वाद्ययंत्र वर्णन है - नरसिंगे, बंसुली, वीणा, सारंगी, सितार, शेहनाई, कितने हुए? छः। क्या आपको समझ में आया? 666, सो परमेश्वर कहते हैं, "तुम्हे बाइबिल में हमेशा इस तरह कई चिन्ह मिलेंगे।" कुछ भी आकाश के नीचे नया नहीं है। आप और मैं कभी भी उस दौर से नहीं गुजरेंगे जिससे अन्य पीढ़ी नहीं गुजरी है और वहाँ आप पाएँगे कि संगीत ने प्रवेश किया। हालांकि आज भी सबसे ताकतवर क्या है, फिल्म नहीं बल्कि उसका संगीत। आस-पास चल रहे नब्बे प्रतिशत भारतीय लोग फिल्मों को नहीं देख रहे हैं वे संगीत को सुन रहे हैं। संगीत हमेशा आराधना से जुड़ा हुआ होता है। चाहे आप संगीत में परमेश्वर की आराधना करते हैं या फिर आप उस दासता में चले जाते हैं जहाँ संगीत आपको अगुवाई करता है। परमेश्वर संगीत का उपयोग लोगों को छुड़ाने के लिए करते हैं और शैतान संगीत के द्वारा लोगों को दासता में ले जाता है।

भजन संहिता 32:7 [7] तू मेरे छिपने का स्थान है; तू संकट से मेरी रक्षा करेगा; तू मुझे चारों ओर से छुटकारे के गीतों से घेर लेगा॥

सो अगर छुटकारे के गीत है तो दासता के गीत भी हैं। आप पाएँगे कि संगीत सबसे प्रभावशाली यंत्रो में से एक है जिसे शत्रु लोगों को दासता में ले जाने के लिए उपयोग करता है। जैसा कि मैंने कहा हज़ारो-लाखो इब्रानी लोग हैं जो बेबीलोन में हैं। उस में से एक (दानिएल) नहीं है, सिर्फ तीन का उल्लेख है। आपको मालूम है लूका 17:34-36 में यीशु क्या कहते हैं,

लूका 17:34-36

[34] मैं तुम से कहता हूं, उस रात दो मनुष्य एक खाट पर होंगे, एक ले लिया जाएगा, और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। [35] दो स्त्रियां एक साथ चक्की पीसती होंगी, एक ले ली जाएगी, और दूसरी छोड़ दी जाएगी। [36] दो जन खेत में होंगे एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ा जाएगा।

सो अगर एक उठा लिया जाएगा और दानिएल वहाँ नहीं है, क्या अन्य तीन जीवित बच पाएँगे? देखिए, मैं नहीं जानता कि मैं उठा लिए जाने (rapture) में शामिल होऊँगा कि नहीं। क्या कोई पक्के से कह सकता है कि वो उठा लिया जाएगा? अगर आप पक्के से नहीं कह सकते कि आप उठा लिए जाएँगे तो क्या आप धीरज धरेंगे? क्या हम खुद को धीरज धरने के लिए तैयार करते हैं? उठा लिए जाएँगे या नहीं, कोई नहीं जानता, कोई भी स्वर्गदूत नहीं जानता सिर्फ परमेश्वर जानते हैं। वो मूर्ख व्यक्ति है जो यह सोच कर तैयारी नहीं करता, "मैं उठा लिया जाऊँगा/गी, सो मुझे चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं है।" एक बुद्धिमान व्यक्ति धीरज धरने के लिए विश्वास से तैयारी करता है। अब, प्रश्न यह है कि किसमे धीरज धरना है? आग में, कष्ट-क्लेश में। मैं आप से यह प्रश्न पूछना चाहता हूँ। अनुग्रह के समय के दौरान अगर हम यीशु के पीछे चलने में मुश्किल हो रही है तो हम कष्ट/क्लेश के समय में यीशु के पीछे कैसे चलेंगे? अनुग्रह के समय के दौरान, एक छोटी सी मुश्किल के कारण हम यीशु के पीछे चलना छोड़ देते हैं, परमेश्वर कहते हैं, "जब क्लेश का समय आएगा, तुम मेरा अनुसरण कैसे करोगे?" इसलिए परमेश्वर याकूब के द्वारा कहते हैं, "भाइयों, जब तुम कष्टों से और परीक्षाओं से गुजरो तो इसे आनन्द की बात समझो।" लेकिन हम इसे आनन्द से नहीं लेते हैं।

याकूब 1:2,3

[2] हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो [3] तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो....

'बड़े आनन्द' हम इसे बड़े आनन्द के साथ नहीं देखते हैं। परमेश्वर कहते हैं, "नहीं, जब तुम परीक्षाओं के बाद परीक्षा से गुजरो तो इसे बड़े आनन्द की बात जानो क्योंकि तुम देख रहे हो, तुम जानते हो कि जब मुसीबत की घड़ी आएगी तो मैं क्या सह सकता हूँ।" क्योंकि परमेश्वर अपनी सन्तानों को सामना करने और उस में से जयवन्त होकर निकलने के लिए सर्वदा तैयार करते हैं। कुछ लोग जो अपनी परीक्षाओं और क्लेश में से निकल चुके हैं, उन्हें परमेश्वर कहेंगे, "तुम्हे उसमे फिर से जाने की ज़रूरत नहीं है, तुम पहले से ही उस में से निकल कर उतीर्ण हो चुके हो। दानिएल तुमने पहले ही साबित कर दिया, तुम्हे दोबारा उसमे जाने की

ज़रूरत नहीं है। सो तुम यही रहो (हम नहीं जानते उस वक़्त दानिएल कहाँ था)। बिना दानिएल के, मैं तुम तीनो की परीक्षा करूँगा क्योंकि अगर दानिएल वहाँ रहेगा तो वह खड़े होकर कह देगा, नहीं हम दण्डवत नहीं करेंगे और ये तीन भी अनुसरण करेंगे। मैं देखना चाहता हूँ कि तुम तीनो बिना दानिएल के खड़े रह सकते हो या नहीं।" क्या आपको बात समझ में आ रही है? जिन देशो में सताया जाता है, सो आप हमेशा देखेंगे कि जब सताहट बढ़ती है तो सबसे पहले पास्टर मारा जाता है यह देखने के लिए कि लोग खड़े या अडिग रहेंगे कि नहीं। फिर अचानक से आप पाएँगे कि लोगों का एक समूह बिना किसी चरवाहे के खड़े हुए है। क्या आपको बात समझ में आ रही है? परमेश्वर आपको परखेंगे और वह हमे परखते रहेंगे। दानिएल के साथियों ने दण्डवत करने से मना कर दिया। हम कहानी को जानते हैं सो मैं इस में और आगे नहीं जाऊँगा। वे कहते हैं, वे दण्डवत नहीं करेंगे और आप 3:13 में पाएँगे कि नबुकदनेस्सर क्रोधित हो गया, उसे बहुत गुस्सा आया। गुस्से में आकर नबूकद्नेस्सर ने शद्रक, मेशक और अबेदनगो के विरुद्ध आज्ञा दी। सो इन तीनो को राजा के सम्मुख लाया जाता है।

<u>दानिएल 3:13</u> [13]तब नबूकदनेस्सर ने रोष और जलजलाहट में आकर आज्ञा दी कि शद्रक मेशक और अबेदनगो को लाओ। तब वे पुरूष राजा के साम्हने हाजिर किए गए।

मैं आपसे प्रश्न पूछना चाहता हूँ। क्या ये तीनो व्यक्ति बुरे लोग थे? क्या उन्होंने कोई गलत काम किया था? क्या उन्होंने ईमानदारी से राजा की सेवा नहीं की? अगर ऐसा है तो फिर पूरी दुनिया में सच्चे विश्वासियों के विरोध में इतना क्रोध क्यों है जिन्होंने मूर्ति के सामने झुकने से मना कर दिया? आप देखेंगे कि विश्वासियों के विरोध में क्रोध बढ़ रहा है। उन मसीहियों के विरोध में क्रोध नहीं है जिन्होंने सरकार के सामने झुकने के लिए तैयार हो गए हैं और वचन बताती है, "वह बहुत क्रोधित हुआ।" पद 19 को देखें,

<u>दानिएल 3:19</u> [19]तब नबूकदनेस्सर झुंझला उठा, और उसके चेहरे का रंग शद्रक, मेशक और अबेदनगो की ओर बदल गया। और उसने आज्ञा दी कि भट्ठे को सातगुणा अधिक धधका दो।

यह वही व्यक्ति है जिसने उन तीनो को ऊँचे पद दिए थे। क्या आप जानते है कि शुरुआत में परमेश्वर हमेशा क्या कहते हैं? अब आप वापस जाइये और देखिए कि इतिहास में परमेश्वर ने सबसे पहले क्रोधी व्यक्ति को क्या कहा। "कैन, तुम इतना क्रोधित क्यों हो, तुम्हारे चेहरे पर उदासी क्यों छाई हुई है?" बाइबिल यह स्पष्ट करती है कि परमेश्वर हमारे चेहरे की मुद्रा को सर्वदा देखते हैं। तुम इतने क्रोधित क्यों हो? क्या आप जानते हैं परमेश्वर ने गिनती 6 में हारुन से क्या करने को कहा था? वह कहते हैं, "हारुन तुम्हे हमेशा लोगों के सामने खड़े होकर इस प्रकार से आशीष देना है।" पद 22-26 में इस प्रकार से आपको करना है।

<u>गिनती 6:22-26</u>

[22] फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [23] हारून और उसके पुत्रों से कह, कि तुम इस्त्राएलियों को इन वचनों से आशीर्वाद दिया करना कि, [24] यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे: [25] यहोवा तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए, और तुझ पर अनुग्रह करे: [26] यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे, और तुझे शांति दे।

क्या आप जानते हैं कि यहाँ परमेश्वर क्या कह रहे हैं? वह कह रहे हैं, "इस संसार के राजा तुम लोगों से बहुत नाराज़ रहेंगे और उनकी मुखाकृति तुम्हारे प्रति बदल जाएगी, तुम विश्वास के साथ खड़े रहना मैं अपना मुख तुम्हारी ओर रखूँगा और तुम्हे शान्ति मिलेगी।" प्रश्न यह है: क्लेश के मध्य में क्या आपके पास शान्ति रहती है? क्या परमेश्वर ने अपना मुख आप पर चमकाया है? परमेश्वर अपनी सन्तान को ऐसे ही आशीष देते हैं। क्या हम परीक्षा का सामना करने के लिए तैयार है? संसार का राजा कहेगा, "क्या तुम झुकोगे?" वे कहेंगे, "हम नहीं झुकेंगे।"

<u>दानिएल 3:16</u>

[16] शद्रक, मेशक और अबेदनगो ने राजा से कहा, हे नबूकदनेस्सर, इस विषय में तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन नहीं जान पड़ता।

हमे उसके बारे में उत्तर देने की आवश्यकता नहीं है। आप हमारे बारे में जानते हैं। यह अकस्मात् लिया हुआ निर्णय नहीं है। यह निर्णय हमने अपने जीवन में काफी पहले ले लिया है। आप देखें, उसी दिन आप परीक्षा के लिए तैयार नहीं हो सकते हैं। ऐसे कई छात्र हैं जो परीक्षा की तैयारी उसी दिन सुबह को करते हैं। आप जानते हैं मैं हमेशा आप से कहता हूँ कि मेरे पिता एक प्रिंसिपल थे। सो परीक्षा के दौरान उनके संग रहना बहुत मुश्किल होता था क्योंकि वह कभी भी मुझे परीक्षा के दिन पढ़ने नहीं देते थे। वह मुझ से किताबें ले लेते थे। वह कहते थे, "यदि तुमने पढ़ाई नहीं की है तो आज पढ़ने का कोई मतलब नहीं है और यदि तुमने पढ़ाई की है तो आज तुम्हे पढ़ने की ज़रूरत नहीं है।" परीक्षा के दिन आप परीक्षा की तैयारी नहीं कर सकते हैं। आप जानते हैं इसके पीछे क्या सिद्धांत है? अगर आप परीक्षा के दिन पढ़ने की कोशिश कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आप परीक्षा में बस पास होने की कोशिश कर रहे हैं, वो विषय कभी आपके भीतर गया ही नहीं। अगर आप विषय (subject) नहीं जानते हैं, अगर विषय को जाने बिना आप परीक्षा पास कर लेते हैं तो जब आपको नौकरी मिलेगी तो वहाँ आपकी स्थिति बुरी हो जाएगी। परमेश्वर हमे परीक्षा को पास करने की कोशिश

करना नहीं सीखा रहे हैं। **परीक्षा के द्वारा परमेश्वर हम में अपने चरित्र को विकसित करने की कोशिश कर रहे हैं।** क्या आप अपने विषय (subject) को अच्छी तरह जानते हैं? या आप परीक्षा को पास करने की सिर्फ कोशिश कर रहे हैं? और आप देखेंगे कि जब आप स्वर्ग पहुँच जाएँगे तो जो लोग जयवन्त होकर निकलेंगे वे अपने विषय को अच्छे से जानते होंगे। परीक्षा को पास करने से ज़्यादा विषय को सीखना ज़रूरी है और यही वे तीनो (शद्रक, मेशक, अबेदनगो) कहना चाह रहे हैं। यह कोई अन्धा विश्वास नहीं है, उनके विश्वास का विषय काफी स्पष्ट था। इतने सालों तक हमने मसीह का अनुसरण किया और अब किसी अन्य मूर्ति या स्वरुप के सामने हम नहीं झुकेंगे।

दानिएल 3:17 [17] हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं वह हम को उस धधकते हुए भट्टे की आग से बचाने की शक्ति रखता है; वरन हे राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है।

उन दो बातों को देखिए जो उन्होंने कहा, "अगर आप हमे आग में फेंक देंगे तो हमारा परमेश्वर जिनकी हम उपासना करते हैं वह" वह क्या कर सकता है? " वह हम को उस धधकते हुए भट्ठे की आग से बचाने की शक्ति रखता है।" और दूसरी बात, "वह हमे तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है।" ये दोनों अलग बातें हैं। हमारा परमेश्वर सक्षम है और हमारा परमेश्वर करेगा परन्तु हमारा जीवन परमेश्वर के प्रभुत्व के अधीन है। पद 18

दानिएल 3:18 [18] परन्तु, यदि नहीं, तो हे राजा तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत करेंगे॥

परन्तु अगर प्रभु सहायता नहीं करेंगे तौभी हम तेरे देवताओं की उपासना नहीं करेंगे, हम इस मूर्ति के सामने नहीं झुकेंगे। वे क्या कहने की कोशिश कर रहे हैं? वह कहते हैं, "हमारे विश्वास का विषय परमेश्वर है और हमने कोई शर्ते निर्धारित नहीं की हैं। हम परमेश्वर की योग्यता पर शक नहीं कर रहे। हम परमेश्वर की इच्छा पर शक नहीं कर रहे हैं, मगर हमने परमेश्वर के प्रभुत्व में खुद को समर्पण किया है। हम नहीं जानते कि वह क्या करेंगे।" क्या कोई भी यह जानता है कि परमेश्वर क्या करेंगे? "परन्तु हम ने तय कर लिया है कि हम क्या करेंगे।" आप और मैं नहीं जानते कि परमेश्वर क्या करेंगे। हर दिन हम सिर्फ चुन सकते हैं जो हम कर सकते हैं। "हमने किसी और को नहीं परन्तु परमेश्वर पिता की उपासना करना चुना है।" अब वापस पद 17 को देखिए और आपको अन्तर दिखाई देगा।

दानिएल 3:17 [17] हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं वह हम को उस धधकते हुए भट्टे की आग से बचाने की शक्ति रखता है; वरन हे राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है।

"मेरा परमेश्वर मुझे धधकती हुई भट्ठी से बचा सकता है। हे राजा, मेरा परमेश्वर मुझे आपके हाथों से छुड़ाएगा।" ये दोनो एक बात नहीं है। हमारी परीक्षा में आपका और मेरा परमेश्वर ही छुटकारा देने में सक्षम है। वह कर सकते हैं और नहीं भी कर सकते हैं परन्तु वह सर्वदा सक्षम हैं। याकूब मारा जा सकता है, पतरस छुड़ाया जा सकता है, हमारा परमेश्वर सक्षम हैं। चाहे वह छुटकारा दें या न दें, हम नहीं जानते मगर शैतान के सामर्थ से परमेश्वर हमेशा छुटकारा देंगे। आपको परीक्षा से छुटकारा मिलना एक बात है और शैतान से छुटकारा मिलना दूसरी बात है। आपको शक करने की ज़रूरत नहीं है, प्रभु यह आपकी इच्छा है कि आप शैतान की ताकत से मुझे छुटकारा दे। परमेश्वर कहते हैं, "वो मेरी इच्छा है।" चाहे अपने परीक्षा से मुक्ति पाने के लिए, "प्रभु! मैं नहीं जानता कि आपकी इच्छा क्या है, मुझे धीरज रखने में या फिर इस में से बाहर निकलने में सहायता कीजिए।" क्या आपको प्रभु की प्रार्थना याद है? "हमे दुष्ट से बचा (deliver us from the evil one)।" यह परमेश्वर की इच्छा है, इसके लिए आपको परमेश्वर की इच्छा को जानने के लिए उपवास-प्रार्थना करने की ज़रूरत नहीं है। वह सर्वदा राजा के हाथों से यानि दुष्ट के हाथों से हमे बचाने में सक्षम है और वह सर्वदा हमे बचाएँगे। उनका यह कहने का क्या मतलब है? वे नयी वाचा के विश्वासियों के जैसे सुनाई पड़ते हैं। फिली०1:20.21 में पौलुस समझाएँगे जो उन्होंने कहा,

फिलिप्पियों 1:21 [21] क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है।

हम लोग कहते हैं न, "चित मैं जीता, पट तू हारा।" वास्तव में हमे यह कहना चाहिए कि 'चित मैं जीता, पट तू जीता', है न? पर नहीं, हम कहते हैं - 'चित भी मेरी और पट भी मेरी'। यही पौलुस भी कह रहा है, "चाहे मैं जीयूं या मरूँ, यह सर्वदा लाभ ही है। किसी भी तरीके से, मैं इस संसार के राजा की सामर्थ से छुटकारा पाया हूँ। भले ही भट्ठी मुझ से जीत जाए मगर शैतान नहीं। क्यों? क्योंकि परमेश्वर के हाथों में मृत्यु और जीवन की कुंजी है" क्या आपने उनके विश्वास के उद्देश्य को देखा? यहाँ मुख्य शब्द है - छुटकारा/उद्धार। अगर आप सत्य के लिए खड़े हैं, परमेश्वर कहते हैं, "मैं तुम्हे शत्रुओं की सामर्थ से छुटकारा दूँगा। शत्रु तुम पर हावी नहीं होगी।" नहीं तो, वचन यह भी बताती है, "जो सत्य है उसके लिए अगर तुम खड़े नहीं रहोगे तो मैं तुम्हे शत्रु के हाथों में सौंप दूँगा।" बाइबिल इससे भरा पड़ा है। इस्राएल को जो कुछ भी बताया गया उस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया इसलिए वे बेबीलोन के

हाथों में सौंप दिए गए। रोमियों की पूरी पत्री इस विषय में बताती है कि जब लोगों ने विश्वास नहीं किया जो परमेश्वर ने कहा, वह बार-बार शत्रु के हाथों में सौंप दिए गए। प्रभु ने लोगों को भ्रम या धोखे में छोड़ दिया। प्रभु ने लोगों के मन को वचन समझने में असमर्थ कर दिया परन्तु वह फिर भी कहते हैं, "तौभी अगर तुम एक छोटे बच्चे के समान हो जो खड़े होकर कहता है कि मेरे विश्वास का उद्देश्य परमेश्वर है, तो मैं तुम्हे शत्रु की शक्ति से छुटकारा दूँगा। चाहे तो तुम सत्य के कारण धधकती भट्ठी में जाओगे या परमेश्वर कहते हैं, एक दिन सत्य से दूर हो जाने के कारण आग की झील में झोंके जाओगे।" इससे आप चाहे तो सच्चे अनुयायी होकर निकलेंगे, या फिर नहीं तो आप कभी नहीं निकल पाएँगे परन्तु परमेश्वर कहते हैं, "सभी अपना चुनाव कर रहे हैं, हमारे कई चुनाव डर के कारण होते हैं।" हम डरते हैं, मसीही डरते हैं, खोने का डर, प्रतिष्ठा खोने का डर, धन के खोने का डर, आराम को खोने का डर, नुक्सान, भय। तब भी यीशु कहते हैं, पहली बात जब वह अन्दर आते हैं और कहते हैं, "मत डरो।" यहूदियों के डर से वे बन्द कमरे के पीछे इकट्ठे हुए थे, यीशु ने कहा, "डरो मत, डरने की ज़रूरत नहीं है। अगर ऐसे ही डरते रहें तो तुम सत्य के लिए कभी नहीं खड़े नहीं रह पाओगे। इसका अन्त आग की झील होगी।" इसलिए पवित्रशास्त्र प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में बताती है कि कौन से लोगों की सूची आग की झाल में पाए जाएगी? **(प्रका० 21:8)** सबसे पहले है - डरपोक लोग। यह कोई बड़ा पाप नहीं है, पर फिर भी डरपोक लोग, भयभीत लोग पहले उल्लेख हैं, क्योंकि परमेश्वर कहते हैं, *"मैंने तुम्हे भय की आत्मा नहीं दी है।"* भय से कई लोग बहुत सारी चीज़ें कर बैठते हैं। किसने यह सोचा था कि अब्राहम जैसा मनुष्य भय के कारण अपनी पत्नी को बहिन कहा? वो ठीक है, परन्तु जब वे उसकी बहिन को लेने आए, उसने तब भी नहीं बताया कि वह उसकी पत्नी है। यह कहना कि वह मेरी बहिन है जब आप प्रवेश कर रहे हैं एक बात है और फिर जब उसे लेकर जाया जा रहा है तब भी दिखावा करना कि वह मेरी बहिन है, अलग बात है। क्या आपने देखा कि भय आपके साथ क्या कर सकता है? अब्राहम ने मिस्र में अपनी प्रतिष्ठा, अपना नाम, अपनी ईमानदारी सबकुछ खो दिया। क्यों? साधारण सी बात है, वह डर गया था। मत्ती 16:25 में यीशु कहते हैं,

मत्ती 16:25 [25] क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।

क्या आपने देखा है? अब्राहम का जीवन उस समय शारीरिक, झूठा जीवन था। दाऊद के बारे में सोचिए, वह परमेश्वर के हृदय के अनुसार मनुष्य था। उसकी बहुत प्रतिष्ठा थी। सब उससे प्रेम करते थे, सभी यहो सोचते थे कि वह महापुरुष है, फिर उसने अन्य मनुष्य की स्त्री को ले लिया। फिर वह गर्भवती भी हो गयी। अब, वह क्या करने की कोशिश कर रहा है? उसे डर था कि वह अपनी प्रतिष्ठा को खो देगा, उसकी बदनामी हो जाएगी। हम जानते हैं कि उसने अपने आपको बचाने के लिए क्या-क्या किया। उसने पहले उरिय्याह को घर भेजा ताकि बच्चा उरिय्याह का कहलाए, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। उसने उरिय्याह के मृत्यु का वारंट को उसी के हाथ से भेजा, और उसे मरवा डाला, फिर उसकी विधवा से शादी की। सब कुछ उसने अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिए किया। वह अपने जीवन को बचाने की कोशिश कर रहा था, पर परमेश्वर ने कहा, "दाऊद, अगर तुम अपने जीवन को बचाने की कोशिश करोगे तो तुम उसे खोगे, परन्तु मेरे खातिर अगर तुम अपना जीवन खोगे तो तुम उसे पाओगे।" सो एक दिन नातान नबी आता है, "तुम ही वो व्यक्ति हो, तुम खोना चाहते हो या पाना चाहते हो?" अन्य राजाओं के समान वह नातान नबी का सिर कलम कर सकता था। वह शाउल के समान सिंहासन पर सैंतीस साल बैठ सकता था परन्तु वह प्रभु में होकर नहीं मरता, उसकी शाउल के जैसे मृत्यु होती। वह उस दिन चुन सकता था, "क्या मैं भय में होकर अपने जीवन को बचाऊँ या मैं अपना जीवन खोकर पाऊँ।" आप जानते हैं अधिकतर लोग पश्चताप क्यों नहीं करते हैं? क्योंकि वे डरते हैं इसलिए मन नहीं फिराते हैं। वे जानते हैं कि वे गलत हैं, वे पवित्रात्मा के द्वारा पीसे जाते हैं परन्तु वे लोग परमेश्वर के साथ सच्ची प्रतिष्ठा से बढ़कर अपनी झूठी प्रतिष्ठा के प्रति ज़्यादा चिन्तित होते हैं और इसलिए परमेश्वर कहते हैं, "क्या तुम खड़े होगे?" और दाऊद खड़ा हुआ। उस दिन दाऊद खड़ा हुआ। उसने भजन संहिता 51 लिखा और परमेश्वर ने उसे पुनःस्थापित किया। वचन बताती है, "वह अपनी पीढ़ी में परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करेगा और अपने पितरों के साथ सोएगा," क्योंकि उसके विश्वास का लक्ष्य परमेश्वर था और इसके आलावा कोई और नहीं। प्रभु भले ही सभी परीक्षाओं और लोभ और परिस्थितियों में से हमे छुटकारा न दें परन्तु वह प्रतिज्ञा करते हैं, "मैं तुम्हे शैतान के चुंगल से छुडाऊंगा, मैं तुझे दुष्ट के हाथों से छुटकारा दूँगा।"

जॉन बनयन जिसने एक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी जिसका नाम है, "पिलग्रिमस् प्रोग्रेस"। बाइबिल के बाद, यह सब से अधिक पढ़ी जाने वाली मसीही पुस्तक है। उसने यह कहा, "अपनी आज़माइशों का सामना करना मानो शिमशोन का शेर के साथ आमना-सामना करना है। जब आप उसका सामना करे, यह डरावना होगा, जब आप इस पर जयवन्त हो जाएँगे, आप पाएँगे कि उसमे मधु की मिठास है।" वह कहते हैं, "आपको सामना करना ही पड़ेगा, आपको उस में से जयवन्त होना ही होगा। जब तुम उसमे से निकल जाओगे, आपको एहसास होगा कि यह मीठा है।" वह कहते हैं, "दूसरी ओर, प्रलोभन वाइन(मीठा जहर) के समान है। जब आप चखेंगे, यह मीठा लगेगा। वचन बताती है कि बाद में यह सांप के समान तुम्हे डस लेगा।" वह कहते हैं, "आप चुन सकते हैं। अपने इम्तेहान

का सामना करो, उस पर जय हासिल करो, यह आपके प्राण के लिए मीठी होगी। प्रलोभन से हार मान ली तो यह शुरू में मीठी ज़रूर लगेगी फिर यह आपके प्राण को डस लेगी।" यही परमेश्वर हमे सीखा रहे हैं, खासकर जवान लोगों को, जवान बच्चों को जब वे निर्णयों को लेते हैं। ये जवान लोग (शद्रक, मेशक, अबेदनगो), जवान नहीं रह गए हैं बल्कि अब वृद्ध हो चुके हैं। वे अपने जीवन के सबसे बड़ी परीक्षा में खड़े रह पाए क्योंकि उन्होंने अपने जीवन के शुरुआती दौर में परीक्षा को पास कर लिया था। आप नहीं समझते हैं कि प्रतिदिन एक परीक्षा है, उसी परीक्षा में बार-बार न गिरे। आपको पास होने की ज़रूरत है ताकि परमेश्वर आपको अगले स्तर पर पदोन्नत, प्रोत्साहित करे। स्कूल में परीक्षाएँ समाप्त हो जाएँगी, मगर जीवन की परीक्षाएँ कभी समाप्त नहीं होती क्योंकि प्रभु हमे ऐसी चीज़ के लिए तैयार कर रहे हैं जो अनन्त है। जब हम परमेश्वर के पास जाते हैं तो इसे याद रखे। अगर परमेश्वर ने अब्राहम को मोर्या पर्वत पर अपने पुत्र को एवं जलाने के लिए लकड़ी, आग और छूरी को साथ लेकर जाने को कहा है, जब तुम छूरी को उठाओगे तो मैं तुम्हे रुकने के लिए कहूँगा। जब तुम दूसरी तरफ देखोगे तो तुम्हे मेढ़ा दिखाई देगा। अगर परमेश्वर अब्राहम को पहले ही सबकुछ बता देते तो उसकी परीक्षा नहीं हो पाती, यह ड्रामा होता। क्या परमेश्वर ने उसे ऐसा कुछ होने की बात कही थी? नहीं, उन्होंने उसे कुछ भी नहीं बताया था। वो अद्भुत परीक्षा थी, अग्नि के द्वारा परीक्षा परन्तु जब उसने छूरी उठाई, परमेश्वर ने कहा, "रुक जाओ।" उसने एक तरफ देखा, वहाँ उसे मेढ़ा दिखाई दिया, तब उसने अनुभव किया और कहा, "यहोवा यिरै।" वह अपनी परीक्षा में से निकल कर आया और परमेश्वर को एक अन्य स्तर पर अनुभव किया।

इब्रानियों में वचन क्या बताती है, *"विश्वास बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है; क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।"* कोढ़ी शुद्ध होने को ढूंढ रहा था, सैनिकों का सरदार चंगाई ढूँढ रहा था। दुष्टात्मा से ग्रसित लोग छुटकारे की खोज में थे। वे सभी अनुयायी थे। यीशु ने कहा, "सिर्फ चेले मुझे खोजते हैं।" सो जब भी कोई यीशु के पीछे चलना चाहता है, वह पूछते है, "तुम्हारे विश्वास का कारण क्या है, तुम्हारे विश्वास का उद्देश्य क्या है?" परमेश्वर का राज्य शिष्यता (discipleship) के बारे में हैं। आइए प्रार्थना करे।

<u>प्रार्थना:</u>

पिता हम आपके पास आते हैं, हम आपसे प्रेम करते हैं प्रभु और मैं प्रार्थना करता हूँ, आपका वचन कहता है, "आपके वचन को सुनने से विश्वास आता है और आप सच्चे चेलों को खड़ा करेंगे जो परीक्षाओं में स्थिर खड़े रहेंगे और इस संसार के शासक के सामने कभी नहीं झुकेंगे। वे हर परीक्षा, हर प्रलोभन से जयवन्त होंगे ताकि वे अन्त तक धीरज धर सकें। या फिर हमे इस योग्य बनाइये ताकि आने वाली घटनाओं से बच सकें जो इस पृथ्वी पर आने वाली है। हम नहीं जानते प्रभु, हम नहीं जानते कि प्रत्येक जन के लिए आपकी क्या इच्छा है। हम सिर्फ अपने लिए चुन्सकते हैं और मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रत्येक जन चुने, "मैं उस मूर्ति/छवि के सामने नहीं झुकूँगा, जो शत्रु की मूर्ति है, जो इस संसार का शासक है, डर जो इस संसार के कारण आता है। हम उसके आधीन नहीं झुकेंगे प्रभु।" हमे विश्वास के साथ खड़े रहने में सहायता कीजिए ताकि आपको महिमा मिले, हमारे जीवन में आपको आदर मिल सके। धन्यवाद पिता, यीशु के मधुर नाम में मांगते हैं, आमीन।

<u>आशीर्वचन</u>

यीशु मसीह का अनुग्रह, परमेश्वर पिता का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता हम सब के साथ अब से लेकर सदा तक होती रहे। आमीन।

यह सन्देश ग्रेस टेबरनैकल, हैदराबाद, भारत में प्रचार किया गया ऑडियो रिकॉर्डिंग और प्रतिलेख का हिंदी अनुवाद है जिसे आप अंग्रेज़ी में www.gracetabernaclehyd.org से मुफ्त में डाउनलोड कर सकते हैं। जिस प्रकार आपने इस सन्देश के द्वारा आशीष पाई है कृपया कर के इसे दूसरे विश्वासी को देकर आशीषित करें। धन्यवाद। परमेश्वर आपको आशीष दे।